SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. 1st year SESSION – 2021 – 2023

SUBJECT - Learning and Teaching (C-3)

TOPIC NAME – मैस्लो का मानवतावादी अधिगम सिद्धांत

DATE - 18/01/2022

1.

मानवतावादी अधिगम सिद्धान्त

Humanistic Learning Theory

मानवतावादी शिक्षा की ओर मानववादी दृष्टिकोण सीखने की मनोवैज्ञानिक दशाओं की समझ प्रदान करता है। यह ज्ञानात्मक तथा भावात्मक विकास का बोध देता है जो कि आत्मवास्तविकीकरण की ओर ले जाने वाला होता है। मानवतावादी मनोवैज्ञानिक दशायें हैं - "दूसरे के प्रति आदर, विश्वास, तथा उत्तमता की अभिवृत्तियाँ, उनकी वास्तविकता तथा ईमानदारी और सत्यता से दूसरों के साथ व्यवहार तथा दूसरों के विचारों को अनुभूत करना।"

कार्ल रोजर दृढ़ता से शिक्षकों को मानवीय विशेषताओं पर बल देते हैं। वह शिक्षण को एक सहायक सम्बन्ध मानते हैं।

मैस्लो का मानवतावादी अधिगम सि॰
Maslow Theory of humanistic Learning

<u>ऐतिहासिक परिपेक्ष्य</u> :- प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मैस्लो ने मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए वर्ष 1954 में प्रकाशित अपनी motivation and personality एवं व्यक्तित्व की व्याख्या माँग सिद्धांतों के आधार पर प्रस्तुत की थी। उनके माँग सिद्धांत के अनुसार कहा जा सकता है कि व्यक्ति के भौतिक अथवा सामाजिक वातावरण की किसी माँग के कारण उसमें एक गत्यात्मक एवं निर्देशात्मक बल (dynamic and directing force) उत्पन्न होता है जिसे अभिप्रेरणा कहते है। एवं यह बल व्यक्ति को एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित करता है। मैस्लो का यह भी मानना था कि व्यक्ति अपनी विविध मांगों की संतुष्टि के लिए जो प्रयास करता है उन्हीं के परिणामस्वरूप उसे विभिन्न प्रकार के अनुभव प्राप्त होते है। तथा ये अनुभव ही उसके लिए अधिगम को श्रेष्ठ बनाते है।

मैस्लो ने व्यक्तित्व विकास व अधिगम में मानव मूल्यों (Human values) व्यक्तिगत संवृद्धि (Personal Growth) तथा आत्म निर्देश (self direction) को विशेष महत्व दिया है। उनके अनुसार व्यक्तित्व के विकास में अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियायें (Motivation process) महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एवं व्यक्तिगत लक्ष्यों की प्राप्ति की प्रवृत्ति अधिगम का मूलाधार होती है।

मैस्लो ने मानव अधिगम की प्रक्रिया में व्यक्तियों मांगों को महत्व दिया है।

यहाँ माँग से तात्पर्य किसी वस्तु के आभाव की अनुभूति से होता है। जबतक माँग की पूर्ति नहीं होती है तब तक प्राणी में तनाव की स्थिति बनी रहती है।

इन माँगो की पूर्ति करने हेतु ही प्राणी क्रियायें करने को अभिप्रेरित होता है इस प्रकार व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार के मूल में माँगो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो कालान्तर में अधिगम में परिवर्तित हो जाती है मैसलो ने मानव माँगो अर्थात- दैहिक मांगो एवं सुरक्षा माँगों को निम्नस्तरीय तथा अंतिम तीन वर्गों की मांगों को सामाजिक, आत्मसम्मान एवं आत्मसिद्धि की माँगो को उच्च स्तरीय माँग माना जाता है।

मैसलो द्वारा दिये गए पाँच मानव माँग इस प्रकार है :-

1. दैहिक माँग - (Physiological Needs)
2. सुरक्षा माँग - (Safety Needs)
3. सामाजिक माँग - (Social Needs)
4. आत्मसम्मान माँग - (self-Esteem needs)
5. आत्मसिद्धि माँग - (self-Actualization Needs)

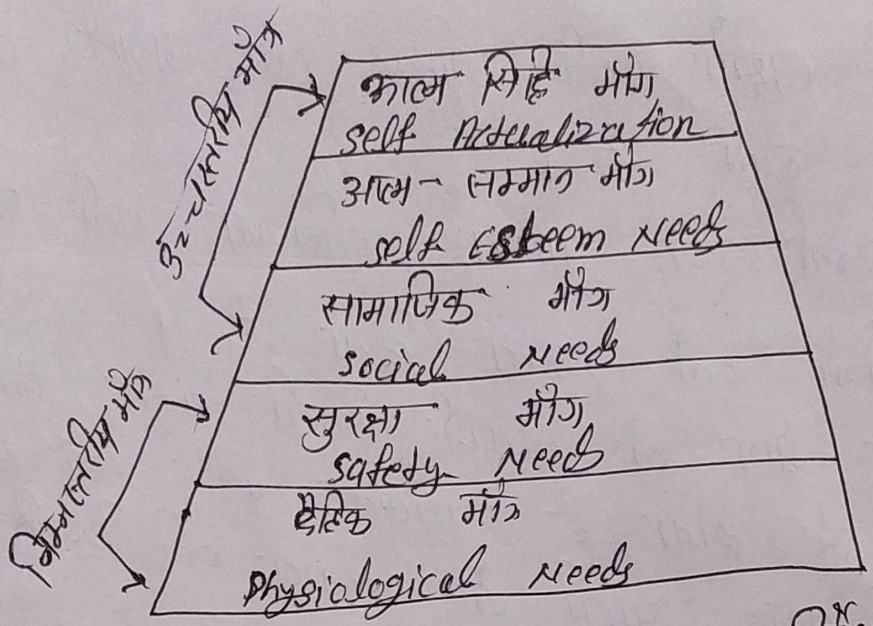

* मैस्लो का मांग पदानुक्रम निर्देश *
(Heirarchical needs & model of maslow)

1.) दैहिक मांग (Physiological Needs) → वे प्रेरक जो व्यक्ति में बुनियादी आवश्यकताओं के कारण उत्पन्न होते हैं मनोदैहिक या शारीरिक या दैहिक प्रेरक कहलाते हैं।

जैसे :— भूख, प्यास, नींद, यौनक्रिया, मल मूत्र आदि

इनकी पूर्ति के आभाव में व्यक्ति का शारीरिक संतुलन बिगड़ जाता है और उनके अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो जाता है।

जब तक इन प्राथमिक आवश्यकताओं की संतुष्टी नहीं हो जाती तब तक इन उच्च स्तर की आवश्यकताओं को निम्न स्तर का ही समझा जा सकता है। अतः इनकी संतुष्टी होना आवश्यक होता है, तभी उच्च स्तर की आवश्यकताएँ उत्पन्न होती हैं।

2.) सुरक्षा माँग (Safety Needs) ⟹ व्यक्ति अपनी शारीरिक या मनोदैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद अपने जीवन की सुरक्षा के लिए प्रयास करता है ताकि उसके जीवन में कोई खतरा न हो और इसके लिए वह सदैव ही ~~प्रत्न~~ प्रयत्नशील रहता है।

3.) सामाजिक माँग :- (Social Needs) ⟹ जब व्यक्ति मनोदैहिक और सुरक्षा प्रेरक से संतुष्टि प्राप्त कर लेता है तो वह समाज से प्रेम, स्नेह, लगाव, सहानुभूति की अपेक्षा करता है। इसके लिए वह हर संभव प्रयास करता है।

4.) आत्म-सम्मान माँग :- (Self Esteem Needs) ⟹ समाज में मधुर संबंध स्थापित करने के साथ-ही-साथ वह आत्म सम्मान को बनाये रखने का प्रयास भी करता है। इसके आभाव में वह अपने जीवन को निरर्थक समझता है।

5.) आत्म-सिद्धि माँग — (Self Actualization Needs) ⟹ अंत में व्यक्ति की सबसे बड़ी इच्छा यह होती है कि वह समाज के हित में कुछ सहयोग दे सके, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, नैतिक आदि किसी भी रूप में हो सकता है।

"अपनी क्षमताओं के अनुसार कुछ कर सकना ही आत्मसिद्धि है।"

मैसलो ने (1954) इन पाँच आवश्यकताओं को फिर दो मूल श्रेणी में विभाजित किया है - निम्न स्तर की आवश्यकता (lower level need) तथा उच्च स्तर की आवश्यकता (upper level need) शारीरिक आवश्यकताओं तथा सुरक्षा की आवश्यकता को मैसलो ने निम्न स्तर की आवश्यकता में रखा है बाकी तीनों आवश्यकता को उच्च स्तर की आवश्यकता में रखा है। जिन व्यक्तियों में उच्च स्तर की आवश्यकता संतुष्ट हो जाती है उनकी निम्न स्तर की आवश्यकताएँ भी संतुष्ट हो जाती है।

मनोवैज्ञानिकों ने मैसलो के आत्मसिद्धि सिद्धान्त को निम्नांकित कारकों के आधार पर आलोचित किया है।

आलोचकों का मत है कि मैसलो ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन वैसे व्यक्तियों के आधार पर किया जिसे वे ऊपरी वर्ग तथा मध्यम वर्ग के लोगों से प्राप्त किया था। अतः इनका सिद्धान्त इन दो वर्गों के लोगों के लिए काफी उचित है। परन्तु निम्न वर्ग के लोगों पर या वैसे लोगों पर जो कम विकसित है तथा गरीब है पर लागू नहीं होता है क्योंकि ऐसे लोगों की शारीरिक आवश्यकताएँ के बारे में सोच भी नहीं पाते है।